Volume 9 • Issue 1-2 • March-September, 2018 ISSN : 0976-0237

Purva Mimaansa

A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

UGC Approved Journal No. 40903

FIRM IN FAITH & LARGE IN HEART
S.D. COLLEGE
AMBALA CANTT

ESTD. 1916

Sanatan Dharma College (Lahore)
Ambala Cantt.-133 001 (Haryana), INDIA
"College with Potential for Excellence"
NAAC Re-accredited with 'A' Grade

Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

ब्राह्मणों का चिकित्सा क्षेत्र में योगदान

डॉ. अमिता रेढू

संक्षेपिका

वैदिक काल से ही ब्राह्मणों का भारतीय इतिहास, राजनीति, धर्म, ज्ञान–विज्ञान एवं अन्य अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त योगदान रहा है। ब्राह्मणों का भारतीय समाज में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी ब्राह्मणों का विशेष योगदान रहा है। जीवन को आरोग्यमय, दीर्घायुष्य–संपन्न, शारीरिक तथा मानसिक कष्टों से मुक्त रखने वाले आयुर्वेदशास्त्र को भूतल पर लाने का श्रेय भी महर्षि भरद्वाज को है। आयुर्वेदशास्त्र के विषयों से पूर्णरूप से सुसज्जित 'चरकसंहिता' जिसे आयुर्वेद का विश्वकोष भी कहा गया है, आचार्य चरक की देन आयुर्वेद वाङ्मय में सुश्रुत संहिता, चरकसंहिता और अष्टाङ्गहृदय की गणना 'वृहत्त्रयी' में तथा माधव निदान, शाङ्र्गधर संहिता और भाव प्रकाश की गणना 'लघुत्रयी' में की गई है।

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः।।[1]

जीवों में प्राणधारी, प्राणधारियों में बुद्धिमान, बुद्धिमानों में मनुष्य और मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ कहे गये हैं। ब्राह्मण हिन्दू धर्म के माने हुए चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण है।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते,
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते या
जात्या कुलेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, एभिर्युक्तो हि
यस्तिष्ठेन्नित्यं स द्विज उच्यते।[2]

ब्राह्मणों की उत्पत्ति के विषय में मनुस्मृति में लिखा है –

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्।।[3]

अर्थात् लोकवृद्धि हेतु ब्रह्मा ने मुख, बाहु, उरु और पैर से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की सृष्टि की तथा इनके कर्मों का निर्धारण करते हुए ब्राह्मणों के कर्मों के विषय में लिखा है –

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्।।[4]

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना ये छः कर्म ब्राह्मणों के लिए

...प्रोफेसर संस्कृत विभाग, गुरु नानक गर्ल्ज कॉलेज, सन्तपुरा, यमुनानगर

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

गये गए हैं। वैदिक काल से ही ब्राह्मणों का भारतीय इतिहास, राजनीति, धर्म, ज्ञान–विज्ञान एवं अन्य अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त योगदान रहा है।

ब्राह्मणों का भारतीय समाज में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। इसमें कोई संशय नहीं है। वेद, पुराण, उपनिषद् इसी बात का प्रमाण हैं। वेदों में भी ब्राह्मणों के विषय में कहा गया है –

ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् अर्थात् ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न।[5]

चिकित्सा के क्षेत्र में भी ब्राह्मणों का विशेष योगदान रहा है। प्राणिमात्र की सर्वप्रथम कामना है – सुखमय दीर्घ जीवन की प्राप्ति। जीवन वृक्ष जब पूर्णतः स्वस्थ और रोगमुक्त होता है, तभी उसमें उत्तम फूल और फल लगते हैं। जीवन को आरोग्यमय, दीर्घायुष्य–संपन्न, शारीरिक तथा मानसिक कष्टों से मुक्त रखना उत्यन्त आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति की है आयुर्वेद ने जिसे हमारे समक्ष लाने का श्रेय भी ब्राह्मणों को ही है।

आयुर्वेद अनादि शाश्वत शास्त्र है ब्रह्मा ने भी इसका स्मरण ही किया – 'ब्रह्मा स्मृत्वायुषो वेदं' आयुर्वेद को पंचम वेद कहा गया क्योंकि आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है और जीवन रहने पर ही अन्य वेदों की सार्थकता है। जिस प्रकार पाँचों अंगुलियों में अंगुष्ठ की प्रधानता है उसी प्रकार वेदों में आयुर्वेद प्रधान है। आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य है स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकारप्रशमनम् च।[7]

अर्थात् स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करना एवं रोगी के रोगों का नाश। सर्वप्रथम ब्रह्मा ने शाश्वत एवं अनादि आयुर्वेद का स्मरण किया। प्राणिजगत् की पीड़ा के प्रतीकार के लिए धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थ साधक आयुर्वेद को ब्रह्मा ने 'ब्रह्मसंहिता' में निबद्ध किया। ब्रह्मा ने दक्ष प्रजापति को आयुर्वेद का उपदेश दिया। प्रजापति के अश्विनीकुमारों को तथा अश्विनीकुमारों ने इन्द्र को आयुर्वेद की शिक्षा दी।[8]

ब्रह्मा से इन्द्र तक की परम्परा 'दैव उपदेश' कही जाती है। आयु पर्यन्त तपस्या, उपवास, अध्ययन, ब्रह्मचर्य व्रत करने वाले देहधारी महर्षि समुदाय के लिए विघ्नस्वरूप रोग जब उत्पन्न हो गए तब प्राणधारियों पर दया भाव को आगे कर पुण्यात्मा महर्षियों ने जनजीवन के कष्ट को दूर करने के उपाय हेतु हिमालय के समीप एक गोष्ठी का आयोजन किया। जिसमें अङ्गिरा, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप, भृगु, आत्रेय, गौतम, पुलस्त्य, अगस्त्य, वामदेव, भरद्वाज, कपिञ्जल, विश्वामित्र आदि अनेक महर्षि उपस्थित हुए। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल साधन–आरोग्य को प्राप्त करने हेतु आयुर्वेद ज्ञान प्राप्ति के लिए इन्द्र के पास जाने के लिए सभी ने एकमत होकर भरद्वाज को नियुक्त किया।[9]

तदनन्तर इन्द्र ने महामति भरद्वाज को स्वस्थपरायण एवं आतुरपरायण हेतु–लिङ्ग–औषधज्ञान से पूर्ण पुण्य एवं शाश्वत आयुर्वेद का उपदेश दिया।

हेतुलिङ्गौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधे यं पितामहः।।[10]

भरद्वाज ने इन्द्र द्वारा प्राप्त समस्त आयुर्वेद का ऋषियों को उपदेश दिया। उनमें महर्षि

Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)
Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

आत्रेय प्रमुख थे। पुनः आत्रेय पुनर्वसु ने अपने छः शिष्यों – अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पराशर, हारीत और क्षारपाणि को आयुर्वेद का उपदेश दिया। इनमें विशुभ्रकीर्ति ऋषिप्रवर अग्निवेश ने सर्वप्रथम गुरुपदिष्ट पर्यवदात ज्ञानराशि को शास्त्र के रूप में संग्रथित कर 'अग्निवेश तन्त्र' का सूत्ररूप में प्राणयन किया।[11]

यायावर ऋषियों की परम्परा के बहुश्रुत आचार्य महान् मनस्वी ऋषि चरक ने 'अग्निवेशतन्त्र' का प्रतिसंस्कार कर नवीनतम शास्त्रमर्यादाओं एवं विषय–सामग्री से सुसज्जित कर संहिता का रूप प्रदान किया और वह 'चरकसंहिता' नाम से लोक में सर्वाधिक प्रचलित हुई। आज यह आयुर्वेद का विश्वकोष बन गया है। इस एकमेव ग्रन्थ के सम्यक् अध्ययन से कायचिकित्सा का परिनिष्ठित ज्ञान अर्जित किया जा सकता है और शल्य–शालाक्य के अतिरिक्त अन्य आयुर्वेदाङ्गों का भी यथेष्ठ ज्ञान प्राप्त करना अधिक श्रमसाध्य नहीं है।

इस प्रकार इस भूतल पर आयुर्वेदशास्त्र को लाने का प्रधान श्रेय महर्षि भरद्वाज को है। प्राणिमात्र के उपकार के लिए आयुर्वेद का प्रचलन करने वाले भरद्वाज ने स्वयं भी आरोग्य सम्पन्न दीर्घायुष्य को प्राप्त किया–

तेनायुरमितं लेभे भरद्वाजः सुखान्वितम्।।[12]

चरकसंहिता के आदि आचार्य अग्निवेश हैं जिन्होंने आत्रेय के उपदेशों का सूत्र रूप में गुंथन किया। यह पहला स्तर है इसका समय 1000 ई. पूर्व कहा गया है।

'अग्निवेशतन्त्र' का भाष्य के रूप में विस्तार आचार्य चरक ने किया, यह दूसरा स्तर है। चरक का समय द्वितीय शताब्दी ई. पू. कहा गया है।

चरकसंहिता को समकालीन आयुर्वेदशास्त्र के विषयों से पूर्णरूप से सुसज्जित कर एक विज्ञान के रूप में प्रस्तुत करने का गौरव आचार्य दृढ़बल का है। यह तृतीय स्तर है और इनका समय चौथी शताब्दी है।[13]

आयुर्वेद वाङ्मय में सुश्रुत संहिता, चरकसंहिता और अष्टाङ्गहृदय की गणना 'वृहत्त्रयी' में तथा माधव निदान, शाङ्र्गधर संहिता और भाव प्रकाश की गणना 'लघुत्रयी' में की गई है।

चरक संहिता के प्रमुख व्याख्याकार (क) संस्कृत व्याख्याकार

(1) चक्रपाणि (1075 ई.) : चक्रयाणि ने चरक पर 'आयुर्वेददीपिका' नामक व्याख्या लिखी है जो वैदुष्यपूर्ण है तथा संस्कृत टीकाओं में इसका सर्वोच्च स्थान है। इसी कारण इन्हें 'चरक–चतुरानन' उपाधि से और सुश्रुत संहिता पर 'भानुमती' टीका लिखने के कारण 'सुश्रुत–सहस्रनयन' उपाधि से अलंकृत किया था। इसके अतिरिक्त इन्होंने चक्रदत्त, द्रव्यगुणसंग्रह, शब्दचन्द्रिका, व्याकरणतत्त्व चन्द्रिका और सर्वसारसंग्रह की भी रचना की।14

(2) गंगाधर राय (1799–1855 ई.) : चरकसंहिता पर इनकी व्याख्या 'जल्पकल्पतरु' है। इनकी रचनाओं की संख्या 76 कही जाती है। आयुर्वेद पर इनकी मुख्य रचनाएँ आयुर्वेदीय परिभाषा, भैषज्यरामायण, नाड़ीपरीक्षा, मृत्युञ्जय संहिता, आयुर्वेद संग्रह, आरोग्य–स्तोत्र आदि हैं। यह उच्चकोटि के विलक्षण प्रतिभासम्पन्न विद्वान और सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले विशिष्ट व्यक्तित्वसम्पन्न महापुरुष थे। इनके शिष्यों में सत्यनारायण शास्त्री थे, जो राष्ट्रपति के चिकित्सक थे, पद्मविभूषण थे और विविध विद्यायों के पारगामी विद्वान् तथा सिद्धहस्त चिकित्सक थे। इनके शिष्यों की संख्या हजारों में है।[15]

...No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

(ख) **हिन्दी व्याख्याकार**

1) पं. रामप्रसाद शर्मा (1939) : इन्होंने चरक संहिता पर हिन्दी टीका, अष्टांगहृदय पर टीका तथा 'आयुर्वेदसूत्रम्' नामक सूत्रशैली पर विशिष्ट ग्रन्थ लिखा है।

2) जयदेव विद्यालङ्कार (बीसवीं शताब्दी) : चरक व भैषज्य–रत्नावली की हिन्दी टीका

3) अत्रिदेव विद्यालङ्कार (20वीं शताब्दी)

4) काशीनाथ पाण्डेय एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी – विद्योतिनी टीका

5) ब्रह्मानन्द त्रिपाठी – चरक–चन्द्रिका–टीका

6) प्रियव्रत शर्मा – आपने–चरक संहिता की अंग्रेजी व्याख्या लिखी है। आपकी मुख्य रचनाओं में द्रव्यगुणविज्ञान, आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास, चरक–चिन्तन एवं वाग्भट्ट–विवेचन आदि हैं।[16]

(ग) **अंग्रेजी अनुवाद**

डॉ. भगवानदास तथा रामकरण शर्मा

डॉ. प्रियव्रत शर्मा

जिस प्रकार महर्षि आत्रेय के उपदेशों का संग्रह कर अग्निवेश ने अग्निवेश – तन्त्र की रचना की जो आगे चलकर चरकसंहिता नाम से प्रसिद्ध हुई और अनेक विद्वान ब्राह्मणों ने उस पर संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में टीकाएँ लिखी। उसी प्रकार सुश्रुत ने धन्वन्तरि के उपदेशों को संगृहीत कर सुश्रुतसंहिता का निर्माण किया जिसकी 'चक्रपाणि' ने 'भानुमती' नामक संस्कृत टीका, अम्बिकादत्त शास्त्री व अत्रिदेव विद्यालङ्कार ने हिन्दी व्याख्या की।[17]

आचार्य वाग्भट्ट ने नातिसंक्षेप नातिविस्तर शैली पर अष्टांगहृदय की रचना की। ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ को आयुर्वेद–वाङ्मय रूपी समुद्र का हृदय कहा है –

हृदयमिव हृदयमेतत् सर्वायुर्वेदवाङ्मयपयोधेः।[18]

अष्टांगहृदय पर अरुणदत्त (1224 ई.) ने सर्वाङ्गसुन्दरी' टीका लिखी है तथा शिवशर्मा ने हिन्दी में 'शिवदीपिका' लिखी हैं।

भावप्रकाश के रचयिता भावमिश्र भी जाति से ब्राह्मण थे। इन्होंने प्राचीन संहिताओं के मार्ग पर चलते हुए नवीन विचारों तथा नवीन द्रव्यों का उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ के निघण्टु भाग में सर्वाधिक वैशिष्ट्य है।[19]

मानव कल्याण हेतु ब्राह्मणों के प्रयत्नों से ही आयुर्वेद की प्राचीन संहिताओं की 'वृहत्त्रयी' एवं 'लघुत्रयी' आज हमारे समक्ष हैं।

बीसवीं शताब्दी में 'पं. शंकरदाजी शास्त्री पदे' ने आयुर्वेद के विकास के लिए 1907 में 'अखिल भारतवर्षीय वैद्य–सम्मेलन' और विद्यापीठ की स्थापना की। इसी सम्मेलन के माध्यम से इन्होंने सारे देश के वैद्यों का संगठन–कार्य प्रारम्भ किया तथा विद्यापीठ के माध्यम से अध्ययनाध्यापन तथा परीक्षाएँ भी आरम्भ की गई।[20] इसी के माध्यम से अनेक आयुर्वेदिक कॉलेजों की स्थापना हुई और आयुर्वेद के पठन–पाठन का कार्य प्रारम्भ हुआ। इनके अतिरिक्त पंडित मदन–मोहन मालवीय, सम्पूर्णानन्द जी, पंडित शिवशर्मा, पण्डित रामरक्षा पाठक, श्री विश्वनाथ द्विवेदी, पं. रमानाथ द्विवेदी, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, पं. सत्यनारायण शास्त्री, हरिदत्त शास्त्री आदि अनेक ब्राह्मण महापुरूषों का भी आयुर्वेदोत्थान की दिशा में अमूल्य योगदान है।

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

इन्हीं विद्वानों के प्रयत्नों से ही आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को प्रोत्साहन मिला। आयुर्वेद, चिकित्सा के गूढ़तम सिद्धान्तों वाला शास्त्र है तथा चिकित्सा–कर्म के विविध क्षेत्रों में उसका बहूमूल्य योगदान है।

धर्मार्थ–काम–मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के मूल कारण आरोग्य को प्रदान करने वाला आयुर्वेद परम लोकहितैषी शास्त्र है, क्योंकि वह मनुष्य को इस योग्य बनाता है कि वह आरोग्यमय जीवन पाकर अपने जीवन को सफल बना लें।

विद्वानों ने भी कहा है –

तस्यायुषः पुण्यतमो वेदो वेदविदां मतः।
वक्ष्यते यन्मनुष्याणां लोकयोरुभयोर्हितम्।।[21]

सर्वशास्त्रोपकारक होने से आयुर्वेद को 'पुण्यतम वेद' कहा जाता है। और इस पुण्यतम वेद को संहिताओं के रूप में लाने का और उसे सरल एवं सुबोधगम्य बनाने का श्रेय ब्राह्मणों को ही जाता है।

संदर्भिका

1. मनुस्मृति, (व्याख्याकार) पं॰रामेभवर भट्ट, चौखम्बा संस्कृत प्रतिशठान, दिल्ली, 1985, 1.96
2. संस्कृत–हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ. 698
3. मनु. 1.31
4. वही 1.88
5. ऋ. 10.90.12
6. अ. हृ. सू.।
7. च. सू. (व्याख्याकार) आचार्य विद्याधर शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिशठान, दिल्ली, 2010, 30. 26
8. च. सू. 1.4–5
9. वही, 1.6–13, 19
10. वही, 1.24
11. वही, 1.30–32
12. वही, 1.26
13. आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय, डॉ. विद्याधर शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिशठान, दिल्ली, 1996, पृ. 51
14. वही, पृ. 55
15. वही, पृ. 57
16. वही, पृ. 60
17. वही, पृ. 64
18. अ. ह. उ. 40.81
19. आ. का इतिहास, पृ. 86
20. वही, पृ. 181
21. च. सू. 1.43